सीबीएसई कक्षा 12 इतिहास
पाठ - 08 किसान, जमींदार और राज्य कृषि समाज और मुग़ल साम्राज्य
(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)
पुनरावृत्ति नोट्स

स्मरणीय बिन्दु–

1. सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में करीब करीब 85 फीसदी लोग गाँवों में रहते थे।
2. छोटे खेतिहर और भुमिहर-संभ्रांत, दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे।
3. खेतिहर समाज की बुनियादी इकाई गाँव थी, जिसमें किसान रहते थे।
4. कृषि इतिहास के मुख्य स्रोत मुग़ल दरबार की निगरानी में लिखे गए थे।
5. गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान व ईस्ट इंडिया कंपनी के दस्तावेज भी इस काल के स्रोत हैं।
6. रैयत, मुज़रियान, खुद-काश्त, पाहि-काश्त - किसान के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द हैं।
7. मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ था।
8. मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी।
   एक खरीफ (पतझड़ में)
   दूसरी रबी (वसंत में)
9. मध्यकाल में कृषि वर्षा पर निर्भर थी पर सिंचाई के लिए कुछ कृत्रिम उपाय भी अपनाये गये तथा शहर द्वारा, कुओं से पानी निकाल कर एवं नहर द्वारा।
10. मध्यकालीन भारत में खेती सिर्फ़ गुजारा करने के लिए ही नहीं की जाती थी। बल्कि स्रोतों में हमें अक्सर **जिन्स-ए-कामिल** (सर्वोत्तम फसलें) जैसे लफ़्ज़ मिलते हैं। उदाहरण के लिए गन्ना, कपास जैसी नकदी फसलें। तिलहन और दलहन भी नकदी फसलों में आते थे। मध्य भारत एवं दक्खिनी पठार की जमीन पर कपास उगाई जाती थी। जबकि बंगाल चीनी के लिए मशहूर था।
11. टमाटर, आलू और मिर्च जैसी सब्जियाँ, अन्नास एवं पपीता भारत में नयी दुनिया से लाये गये।
12. ग्रामीण समुदाय के सीन घटक थे- खेतिहर किसान, पंचायत और गाँव का मुखिया। (मुक़द्दम या मंडल)।
13. समसामयिक रचनाएँ जंगल में रहने वालों के लिए जंगली शब्द का इस्तेमाल करती हैं।
14. सत्रहवीं सदी में मारवाड़ में लिखी गई एक किताब राजपूतों की चर्चा किसानों के रूप में करती है।
15. जिन गाँवों में कई जातियों के लोग रहते थे, वहाँ अक्सर पंचायत में भी विविधता पाई जाती थी।
16. ग्राम पंचायत के अलावा गाँव की हर जाति की अपनी पंचायत होती थी।
17. ग्रामीण समाज में किसानों और दस्तकारों के बीच फ़र्क करना मुश्किल होता था।
18. कृषि समाज में महिलाएँ मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम, यथा बुआई निराई, और कटाई के साथ-साथ, पकी हुई फ़सल का दाना निकालने का काम करती थीं।
19. ज़मींदार राज्य को कुछ ख़ास किस्म की सेवाएँ देते थे |

20. जमींदारो की व्यक्तिगत जमीन को मिल्कियत कहा जाता था।
21. मुगलकालीन गाँवों में सामाजिक संबंध एक पिरामिड के रूप में
22. मध्यकाल में भू-राजस्व के इंतजामात के दो चरण थे - कर निर्धारण और वास्तविक वसूलील।
23. कृषक ग्रामीण समाज का एक मुख्य वर्ग था और उससे बसूले गए राजस्व पर ही पूरा प्रशासन और राजतंत्र आधारित था।
24. इटली के एक मुसाफिर जोवान्नी कारेरी, जो लगभग 1690 ई में भारत से होकर गुजरा था ने इस बात का सजीव चित्र पेश किया है कि किस तरह चाँदी तमाम दुनिया से होकर भारत पहुँचती थी।
25. पशुपालन और बागवानी में बढ़ते मुनाफे की वजह से अहीर, गुज्जर, और माली जैसी जातियाँ सामाजिक सीढ़ी से ऊपर उठी।
26. जजमानी-18वीं सदी के स्रोत बताते हैं कि बंगाल में जमींदार लुहार बढ़ई सुनारों आदि को उनकी सेवा के बदले रोज का भत्ता और खाने के लिए नकदी देते थे। इस व्यवस्था को जजमानी कहते थे।
27. ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फैसले लेते थे और कमज़ोर वर्गों का शोषण करते थे।
28. मनसबदारी व्यवस्था मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैनिक नौकरशाही तंत्र (मनसवदारी) था जिस पर राज्य के सैनिक व नागरिक मामलों की जिम्मेदारी थी।
29. 'छोटे गणराज्य' जहाँ लोग सामूहिक स्तर पर भाई चारे के साथ संसाधनों और श्रम का बँटवारा करते थे।
30. इस काल में जमीन की बहुतायत मजदूरों की मौजूदगी तथा किसानों की गतिशीलता के कारण कृषि का लगातार विस्तार हुआ। सिंचाई कार्यों को राज्य की मदद मिलती थी।
31. जमा निर्धारित रकम थी और हासिल सचमुच वसूली गई रकम।
32. राजस्व वसूल करने वाला अधिकारी अमील-गुजार कहलाता था।
33. अकबर ने भूमि का वर्गीकरण करवाया और उनके अनुसार राजस्व निर्धारित किया यथा - पोलज, परौती, चचर एवं बंजर।
34. **अकबरनामा**, अकबर के काल का, अबुल, फ़ज़्ल द्वारा तीन जिल्दों में रचा गया ऐतिहासिक दस्तावेज है। **आइन-ए-अकबरी** इसी का एक भाग है।
35. पाँच भाग (दफ्तरों) में संकलित आइन में अकबर के दरबार, प्रशासन, सेना का संगठन, राजस्व को स्त्रोत, प्राती का भूगोल, लोगो के साहित्यिक, सांस्कृतिक व धार्मिक रिवाज का विवरण दिया गया है।
36. आइन में जोड़ संबंधी गलतियाँ तथा संख्यात्मक अकड़ों में विषमताएँ पायी गयी हैं।
37. अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण- पोलज वह जमीन है जिसमें एक के बाद एक फसल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है। परौती वह जमीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके। चचर वह जमीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है। वंजर वह जमीन है जिस पर पाँच या उससे ज्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई है।

महत्वपूर्ण बिंदु-

1. किसान और कृषि उत्पादन
भौगोलिक विविधता

1.1 स्रोतां की तलाश
ऐतिहासिक ग्रंथ आइने-ए-अकबरी

गुजरात, महाराष्ट्र तथा राजस्थान से मिलने वाले दस्तावेज

1.2 किसान और उनकी जमीन
खेती व्यक्तिगत मिल्कियत के सिद्धांत पर आधारित होना

1.3 सिंचाई और तकनीक
कृषि का विस्तार
मानसून पर कृषि पर आश्रित होना
सिंचाई के कृत्रिम उपाय अपनाना
कृषि पशुबल पर आधारित होना

1.4 फसलों की भरमार
खरीफ व रब की फसल
यूरिया के अलग-अलग हिस्सों से भारत के फसलां का आना

2. ग्रामीण समुदाय

2.1 जाति और ग्रामीण माहौल
आबादी का समूहां तथा जाति व्यवस्था को बंधनी में बंटना
राजपूतों की चर्चा किसानों के रूप में

2.2 पंचायत और मुखिया
पंचायत में विविधता
गांव के मुखियों का चुनाव गांव के बुजुर्गों द्वारा
जाति की अवहेलना रोकने का मुख्य दायित्व गांव के मुखिया की शादियाँ जातिगत मानदंडों के आधार पर
पंचायतों द्वारा झगड़ों के समझौते

2.3 ग्रामीण दस्तकार
दस्तकारों का अधिक संख्या में गाँवों में होना
दस्तकारों को जमीन का महाराष्ट्र में पुश्तैनी अधिकार
सेवाओं का विनिमय

2.4 एक छोटा गणराज्य
सामाजिक लिंग के नाम पर समाज में गहरी विषमताएं

3. कृषि समाज में महिलाएँ
उत्पादन प्रक्रिया में योगदान

कुछ क्षेत्र महिलाओं के लिए सुरक्षित करना
कुपोषण के कारण महिलाओं की मृत्यु दर अधिक होना
महिलाओं द्वारा न्याय के लिए पंचायत से अपील
हिंदु मुसलमान द्वारा न्याय के लिए पंचायत से अपील
हिंदू मुसलमान महिलाओं को जमींदारी उत्तराधिकार के रूप में

4. जंगल और कबीले

4.1 बसे हुए गाँवों के परे
यहाँ के लोगों को गुजारा जंगल के उत्पादां, शिकार और स्थानांतरीय खेती
राज्य के जंगल रक्षाकवच

4.2 जंगलों में घुसपैठ
हाथियों का प्रयोग
मुगलों द्वारा शिकार अभियानों का आयोजन
वाणिज्यिक खेती का प्रसार
सामाजिक कारणों से जंगलवासियों के जीवन में बदलाव आना
जंगल के इलाकों में नई संस्कृति का विस्तार

5. जमींदार
जमींदारों को आर्थिक और सामाजिक सुविधाएँ होना
सैनिक संसाधन ताकत का हिस्सा होना
मुगलकालीन गाँवों में सामाजिक संबंध एक पिरामिड के रूप में
जमींदारी द्वारा बाजारी (हाटों) की स्थापना
जमींदारी का किसानों से आत्मीयता होना

6. भूराजस्व प्रणाली
राज्य का प्रशासन तंत्र
भूराजस्व के इंतजामात में 2 चरण

1. कार निर्धारण
2. वास्तविक वसूली

7. चांदी का बहाव
व्यापार में विस्तार
समुद्री व्यापार से नयी वस्तुओं का व्यापार

8. अबुलफ़ज़ल की आइन-ए-अकबरी
अकबर के शासनकाल में 5 संशोधनों के पश्चात् पूरा होना
ऐतिहासिक दास्तान का आइन अकबरी में वर्णन शाही नियम, राजपत्रों का संकलन सिलसिलेवार संकलन एक शाही कवायद
तीन भाग प्रशासन का विवरण
सूबों के नीचे इकाईयों का
संख्यात्मक आंकड़ों में विशषताएँ
आइन लोगो, उनके पेशों और व्यवसायों, साम्राज्यवादी व्यवस्था और उसके उच्चाधिकारियों की सूचनाएँ देनेवाला ग्रंथ